150 वीं जयंती

ये है बुन्देलखण्ड

भाग-चार

संपादक

लक्ष्मी पाण्डेय

परामर्श

सुरेश आचार्य

प्रो. सुरेश आचार्य, डी.लिट्. • जन्म : 2 अगस्त 1947, पचमढ़ी (म.प्र.) • संप्रति : चेयर पर्सन, गौर स्टडी सेंटर एवं गौर स्मारक, डॉ. हरीसिंह गौर विश्व-विद्यालय, सागर। संपादक 'साहित्य सरस्वती' त्रैमासिक पत्रिका। • प्रकाशित ग्रंथ : व्यंग्य का समाज दर्शन, निराला की सामाजिक चेतना, पूंछ हिलाने की संस्कृति, इधर भी है: उधर भी हैं, पोजीशन सालिड है, गठरी में लागे चोर, आधुनिक हिन्दी गद्य • संपादन : हमारी समस्यायें, कुछ यादें, भारतीय काव्य शास्त्र के अधुनातन आचार्य - भगीरथ मिश्र, मुस्लिम भक्त कवियों का सांस्कृतिक समन्वय, ईसुरी, अभिव्यक्ति, मदान, मेरा शहर, इसी शहर में, हंसा कहौ पुरातन बात, बीसवीं शताब्दी की खड़ी बोली हिन्दी, दैनिक आचरण पत्र में 'आचार्य उवाच' स्तंभ का लेखन • सम्मान : 'विद्यारत्न' भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद अजमेर राजस्थान से। इम्तिहान-ए-इब्तिदाई-जामिया उर्दू, अलीगढ़ से, 'लैटर ऑफ एप्रीशिएशन 99' हिन्दी साहित्य परिषद शा.स्ना.महा. खरगौन (म.प्र.) से, 'लैटर ऑफ एप्रीशिएशन 2002' टीकमगढ़ (म.प्र.) से, बुन्देली लोक साहित्य सम्मान 97, गुंजन कला परिषद जबलपुर, 'सरस साहित्य सम्मान' 96 बुंदेल भारती पृथ्वीपुर (म.प्र.), परिधि सम्मान 2005 - हिन्दी, पद्माकर ट्रस्ट, सागर द्वारा पद्माकर सम्मान, 2016, उर्दू मजलिस सागर (म.प्र.), 'अन्य अनेक साहित्य परिषदों, युवा प्रगति मंचों, संस्थाओं द्वारा सम्मानित'। • वर्तमान पता : 37 अन्नपूर्णा विद्यापुरम मकरोनिया सागर, (म.प्र.)

ये है बुन्देलखण्ड

भाग-चार

सम्पादक

लक्ष्मी पाण्डेय

परामर्श

सुरेश आचार्य

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा सम्पादक/सम्पादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN 978-93-89341-80-5

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 900 रुपये

आवरण

असरार अहमद, सागर

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

YE HAI BUNDELKHAND (Part-IV) *edited by* Dr. Laxmi Pandey

यह गौर बब्बा के प्रति श्रद्धांजलि है...

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।

अर्थात् जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परमसिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

अपने पुण्य दान कर्म के द्वारा परमसिद्धि को प्राप्त बब्बा अगर आज होते तो एक सौ पचास साल के होते। बब्बा यानी डॉ. गौर। यह रिश्ता संसार में और कहीं न मिलेगा। सागर में जन्मे दिल्ली विश्वविद्यालय के फाउंडर वाइस चांसलर एवं नागपुर विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर रहे डॉ. हरीसिंह गौर अपने वार्धक्य में लौटकर अपने शहर सागर आए। यहाँ आकर बुन्देलखण्ड के पिछड़ेपन को दूर करने की दृष्टि से उन्होंने लगभग दो करोड़ रुपयों की सम्पदा दानकर सागर विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह दिन था अठारह जुलाई सन् उन्नीस सौ छियालीस। तीस अध्यापकों और लगभग तीन सौ छात्रों से आरम्भ यह अखण्ड भारत का सोलहवाँ विश्वविद्यालय था। जो आज दिग्-दिगंत में, सात समुन्दर पार तक उनकी धवल कीर्ति पताका फहरा रहा है।

डॉ. हरीसिंह गौर बुन्देला क्षत्रिय थे और समय-समय पर वे गर्वपूर्वक इस बात का उल्लेख भी करते थे। बुन्देला क्षत्रिय भारतीय स्वतन्त्रता के गुणगान करते थे। ये वही हैं जो बड़ी संख्या में शिव की आराधना के कारण 'हरबोला' कहलाते थे। इन्हीं ने झाँसी की रानी को लोक गाथाओं की प्रमुख नायिका बनाया। तब बुन्देलखण्ड बहुत विस्तृत था। फिर अंग्रेजों और तदुपरान्त देशी शासकों ने इसे बार-बार अपनी सुविधा के लिए बाँटा।

बहरहाल आरम्भ में आए रिश्ते पर लौटें। सागर आकर डॉ. हरीसिंह गौर ने भारत के सोलहवें और सी.पी. एंड बरार के तीसरे (आगरा, नागपुर, सागर) विश्वविद्यालय की नींव रखी। अपनी गाढ़ी कमाई का इससे बेहतर उपयोग वे और क्या करते। विश्वविद्यालय की स्थापना के समय का सागर

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डी.लिट्., पूर्व सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, अ.का.मं. भारत सरकार। **जन्म :** 10 मार्च 1968, धारना कलाँ, सिवनी, (म.प्र.)। **शैक्षणिक योग्यता :** बी.एससी., एम.ए. हिन्दी, बी.एड., यू.जी.सी. स्लेट, पीएच.डी., डी.लिट्.। एक अंतरराष्ट्रीय तथा एकाधिक राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित। **प्रकाशित ग्रंथ :** अपरिभाषित, उसकी अधूरी डायरी, इन दो उपन्यासों सहित 30 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी; आचार्य भगीरथ मिश्र; रस विमर्श; साहित्य विमर्श; निराला का साहित्य; तथा आलोचना पर केन्द्रित 'अर्थांत' पुस्तकें विशेष चर्चित। भाषा विज्ञान, भारतीय काव्यशास्त्र एवं आलोचना संबंधी लगभग दस पुस्तकें देश के अनेक विश्व-विद्यालयों में एम.ए. के दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों में सम्मिलित। अनेक पत्रिकाओं का संपादन। अनेक कहानियाँ विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित। आकाशवाणी सागर से कहानियों का प्रसारण। **विदेश यात्रा :** थाइलैंड। **सम्प्रति :** अध्यापन, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर, वि.वि., सागर, म.प्र.। **पता :** श्रीसूर्यम्, कुलपति निवास के सामने कोर्ट रोड, 10-सिविल लाइन, सागर (म.प्र.)-470001, मो. 9753207910, shreesuryam@gmail.com

"भारत के मानचित्र पर बुन्देलखण्ड पेपरवेट की तरह है। इस पेपरवेट की वजनदारी इसके इतिहास, पुरातत्व, संस्कृति, कृषि, नदियों, जंगल आदि भौगोलिक सौन्दर्य और समृद्धि में निहित है। यहाँ की संस्कृति और सभ्यता को क्षेत्रीयता के रंगों ने अद्‌भुत जादुई आकर्षण, वैविध्य तथा रोचकता प्रदान की है। मूर्तिकला के अनुपम सौन्दर्य को देखकर तत्कालीन राजाओं की परिष्कृत रुचि एवं कलाकारों की साधना के सामने नतमस्तक हुआ जा सकता है।"

—लक्ष्मी पाण्डेय

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली-110032

978-93-89341-80-5
9 789389 341805
₹ 900.00